मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एस० आर० भक्त

पी. एस. ई. (रीटायर्ड)

वर्ष 8	बुधवार 10 जून 1981	संख्या 2

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

चेत महीना

सत्संग हजूर परम महाराज मानवत होशियारपुर

दिनांक १५-३-१९

नया वर्ष चेत महीना आप को मुबारिक हो। आध्यात्मिकता या Self realisation की गूढ़ Philosophy राधास्वामी मत में स्वामी जी की चेत मास की वाणी से मिलती है जिसकी मैं आज व्याख्या करके आप लोगों को सुनाता हूं। स्वामी जी की वाणी है :—

चैत महीना आया चेत, बांधा सतगुरु भौ में सेत।
जीव चिताये जो थे वार, भौ सागर से कीन्हे पार।

भवसागर क्या है ? जिन्दगी का नाम भव-

सागर है। मन के जितने ख्यालात या आत्मा के विचार हैं यह सब भवसागर है और हम इस भवसागर में रहते हुए दु:ख-सुख उठाते हैं। कई लोग कहते हैं कि आत्मा नाशरहित है। मैं नहीं कहता कि वे ग़लत कहते हैं। अगर आत्मा नाशरहित है तो आत्मा तो जन्मता-मरता रहेगा, आता रहेगा। जब नाशरहित हुआ तो कहीं तो फंसा न ! कभी इस चोले में, कभी उस चोले में, कभी इधर, कभी उधर। यह ऐसा मामला है जिसे मेरा दिमाग़ हल नहीं कर सकता। मैं तभी तो कहता हूं कि जो बड़े बड़े आदमी हैं वे किताबों का हवाला न दें बल्कि अपने जीवन का अपना अनुभव ब्यान करें तब यह मुआमले साफ होंगे। हम तो जो किताबों में लिखा है वह कहते हैं। भवसागर से पार होना क्या है ? सद्गुरु ने क्या पुल बांधा ? सत्संग। उसने क्या किया ? जो भवसागर के इस ओर थे उनको समझा-बुझा कर भवसागर से पार कर दिया। जैसे मैंने कहा कि मैं इस मन रूपी चक्कर में अब फंसा नहीं, मन के चक्कर में रहता हूं मगर फंसता नहीं। क्योंकि मुझे यह ज्ञान हो गया कि जितने रूप-रंग,

शक्लें बनती हैं, ख्यालात व विचार उठते हैं यह **सब माया है । इस** एक ज्ञान ने मेरी ज़िन्दगी **का** तख्ता वदल दिया । मेरा ख़ून, मेरा शरीर, मेरे ख्यालात, मेरा मस्तिष्क और मेरे व्याख्यान करने का ढंग सब वदल गये । और इसी एक बात को पर्दे में रख कर प्रायः इन धर्म वालों ने हम गृहस्थियों को मूर्ख बना कर लूटा है । मैं यह दर्द दिल से कह रहा हूं । लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रकट होता है, वड़े २ चमत्कार करता है और मैं हैरान होता हूं कि मेरे तो वाप को पता नहीं होता । अगर मैं आप को यह सच्ची बात नहीं बताता तो मुझे जो पैसा आ कर दोगे, मेरी सेवा करोगे वह रुपया मेरी जान को खा जायेगा । क्योंकि मैंने आप लोगों के साथ धोखा किया । आप को सच्ची बात नहीं बताई कि मैं तुम्हारे अन्दर नहीं गया । यही एक भेद था, जिस भेद को मैंने खोला । और, मैं यह भी जानता हूं कि इस भेद को खोलने से हानि भी है कि लोगों का अज्ञान का जो विश्वास है; टूटता है । मगर इस अज्ञान के विश्वास का परिणाम क्या है ? विभाजन में क्या हुआ ?

मुसलमानों ने समझा हज़रत अली सहायता करता है, सिक्खों ने समझा अकाल पुरुष सहायता करता है, हिन्दुओं ने समझा महादेव सहायता करता है और सिर कट गये। इस अज्ञान का परिणाम यह हुआ कि इन्सानी नसल वट गई और हमारा आपसी इत्तफाक नहीं है। क्योंकि मेरे जिम्मे duty है :—

तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत् में आया, परम दयाल स्नेही।

अत: मैंने जगत् कल्याण को View में रख कर के इस भेद को खोल दिया। ताकि जो समझदार व्यक्ति है वे धार्मिक पक्षपात में न आयें। तुम्हारी इच्छा है तुम राम को पूजो, तुम्हारी इच्छा है तुम कृष्ण, देवी या गुरु को पूजो, वह तुम्हारा अपना ही मन है। उसके लिए आप किस लिए आपस में झगड़ा करते हो। जो शक्ति एक व्यक्ति देवी की पूजा से ले सकता है वही शक्ति एक फ़क़ीर चन्द, मुहम्मद या कृष्ण के रूप से भी ले सकता है। फिर हमारा झगड़ा क्यों ? मैंने इस बात को इस ख्याल

से ज़ाहिर किया है। मेरे स्पष्ट कहने से अज्ञानी जीवों के अज्ञान, अन्धविश्वास में धक्का पहुंचता है। मगर यदि अन्धविश्वासी रहेगा तो वह इस भवसागर से पार नहीं जा सकेगा। एक व्यक्ति राम का, कृष्ण का या किसी गुरु का सारा जीवन विश्वास रखता हैं तो वह जन्म-मरण से तो नहीं बच सकता। क्योंकि वह किसी दूसरे का सहारा लिए हुए है तथा जो सहारा है वह उसके मन का बनाया हुआ है और मन ही भवसागर हैं। मैंने अपनी नीयत से बिल्कुल सच्चाई से काम किया है। तुम्हारा अज्ञान का विश्वास ठीक है मगर यदि अज्ञान का विश्वास रखोगे तो तुम भवसागर से पार नहीं जा सकते। गो, तुम्हारा अपना भवसागर प्रेम से अच्छा रहेगा। मगर भवसागर से तो पार नहीं जा सकते। पार तो तब जाओगे जब तुम मन को छोड़ जाओगे :—

जीव चिताये जो थे वार, भौ-सागर से कीन्हे पार।

भवसागर से कैसे पार किये ? मैंने आप को बता दिया, मुझे नहीं पता, राधास्वामी दयाल या और सन्त संसार को कैसे पार करते हैं। मैं

जैसे पार हुआ मैं वह बताता हूं कि केवल मन, माया के रूप का विश्वास हो जाने से जो कुछ मन के अन्दर प्रकट होता है, माया है, है नहीं और वास्तविकता की समझ आने पर, इस एक बात नें मुझे भवसागर से पार होने का अवसर दिया। यही बात तुलसीदास जी ने रामायण में कही है। वह कहते हैं :—

गो गोचर जहां लग मन जाई, तहां लग माया कृत जानो भाई।

क्या अन्तर है महाराज! अब जो राम का ध्यान करता है, तुलसी दास के कहने अनुसार क्या वह माया नहीं है। जो कृष्ण व बाबा फकीर का ध्यान करता है या जिसके अन्दर देवी-देवता प्रकट होते हैं क्या वह माया नहीं है? कोई अन्तर नहीं, अन्तर केवल यह है कि किसी ने इस सच्चाई को ध्यान नहीं किया। मैं हैरान होता हूं। मैं सनातन धर्म या सन्तमत में कोई अन्तर नहीं समझता। राधास्वामी मत सनातन धर्म के निवृत्ति मार्ग की एक शाखा है। बस इसके सिवाय और कुछ नहीं। राधास्वामी मत और कबीर मत ने अगली stages को स्पष्ट

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

के ग़लत अर्थ समझे और गुरुओं ने सच्चाई न बता कर अपनी जायदादें, अपनी मोटरकारें और अपनी जागीरें बना लीं। मतलब यह है कि बाहरी गुरु सत्संग करवा कर जुगात का असली अर्थ समझा देता है इसीलिए सन्तमत में जीवित गुरु की महिमा गाई गयी :—

सुरत बहे थी नौ की धार, ताहि चढ़ाया गगन मंझार।

जब हम attach होते हैं तो हमारा मन शरीर और ख्यालों की ओर बहता रहता है लेकिन जब यह बन्द हो जाते हैं, फिर जब इन्सान अपने अन्दर जाता है, तो आगे क्या होता है :—

गगन जाय धुन शब्द सिहारी, देखा रूप जोत अति भारी।

जब मन इस तरह से attachment छोड़ जाता है तो फिर उसके आगे प्रकाश है, ज्योति और शब्द है। मैंने 12-12 घण्टे अभ्यास किया है। मगर जो अब करता हूं वह और है, जो पहले करता था वह और था; तथा मैं सच्चाई को समझना चाहता था। दाता दयाल ने जब यह गुरुआई का

काम दिया था तो कहा था कि तुमको सच्चा सद्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा जो तुम को मंजिल पर पहुंचायेगा, जब से मुझे मन के रूप और वास्तविकता का ज्ञान मिला। मैं तो आगे जाना चाहता था अत: मैं अब मन को छोड़ जाता हूं। आगे प्रकाश और शब्द है। यह आसान तरीका है ;—

जोत निहारे देखे तारा, बंक नाल का खोले दवारा।

मैंने बंक नाल को क्या समझा ? बंक नाल टेढ़े मार्ग को कहते हैं जो पहले नीचे जाता है फिर ऊपर आता है। अब हमारे अन्दर टेढ़ा मार्ग क्या है ? तुम रात को सो जाते हो। तुम देखो, जागते रहो। जब नींद आने लगती है तो क्या होता है ? गुम हो जाते हो फिर स्वप्न आ जाता है। वह जो गुम हो जाना यानि नीचे जाना और फिर शरीर को भूल कर स्वप्न में चले जाना, ऊपर आना, इसका नाम बंक नाल है। सुरत कितनी नीचे जाती है फिर ऊपर जाती है, जो प्रत्येक Stage पर होता है। इसको सन्धि बोलते हैं, सन्ध्या। जाग्रत या स्वप्न अवस्था के मध्य एक बंक नाल है। स्वप्न

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

से सुषुप्ति की अवस्था के मध्य दूसरी बंक नाल हैं। सुषुप्ति से तुरीया की अवस्था में तीसरी बंक नाल है इस तरह बंक नालें कई हैं। तो क्या होता है? हमारी हस्ती जो है एक अवस्था से गुज़र कर दूसरी अवस्था में चली जाती है तो जिस से गुज़रती है उसमें हम गुम या लीन हो जाते हैं। इसका नाम बंक नाल है। जो मैंने समझा है। शायद राधास्वामियों का बंक नाल कोई और हो। मैं नहीं जानता :—

संख सुना और धुन ओंकारा, शब्द गुरु का घाट निहारा।

मैंने एक पुस्तक लिखी है कि यह शब्द, घण्टा, शंख, ओंकार, मुरली और वीणा क्यों बजती है? ये जितनी अवस्थाएं हैं ये हमारे जीवन की प्रकृति के वोधभानों के खेल हैं। इसकी बहुत व्याख्या कर चुका हूं। जब से मुझे यह ज्ञान हुआ कि ये मन के दर्जे हैं तो अब मैं लाख प्रयत्न करूं कि मुझे घण्टा, शंख सुनाई दे, अब सुनाई नहीं देते। क्यों? क्योंकि मैं मन रूपी चक्कर से निकल गया। ये खेल मेरे मन के वोधभानों के थे क्योंकि मुझे ज्ञान हो गया कि यह सब

माया और मन का चक्कर है, इसलिए अव इस ज्ञान के होने के कारण नहीं आते । अब अन्तिम शब्द आता हैं जिसको राधास्वामी नाम, सार शब्द या निज नाम कहते हैं। इस को सुनता हूं। यही सारा भेद है :—

छोड़ा मन अव चेती सुरत, त्रिकुटी चढ़ निरखो गुरु मूरत।
गुरु चेला मिल आगे चाली, मान सरोवर शब्द सम्हाली, ॥

बाहरी गुरु का रूप तब तक आता है जब तक तुम्हारा मन मौजूद है । जब मन अमन हो जायेगा गुरु का रूप समाप्त हो जायेगा । इस मन का Thoughtless हो जाना या वेख्याली में चले जाने का नाम शून्य है और शून्य कोई नई चीज़ नहीं है। रोचक और भयानक बातें सुनते-२ आयु व्यतीत हो गई । मैं यह देखने के लिए कि सुन्न, महासुन्न या मान सरोवर क्या है ? सारा जीवन अभ्यास करता करता मर गया मुझे कैसे पता लगा। जब मैं अन्दर जाता था प्रकाश देखता था, पानी देखा करता था। कभी कभी बत्तखें, बड़े-2 फूल बड़े-2 दृश्य और चाँद का प्रकाश देखा करता था। वर्षों की बात है। एक दिन

मैं यहां सत्संग करा रहा था तो एक आदधर्मी दौड़ा हुआ आया और मेरे पांव पर पड़ गया। मैंने कहा-तू कौन है ? कहने लगा बाबा, मैंने नाम लिया हुआ था। मैं अपने अन्दर अभ्यास में गया, बड़ी रोशनी थी, एक तालाब था जिसमें फूल लगे हुए थे, बत्तखें और हंस थे। उसमें एक महात्मा खड़ा था उसको मैं मिला। उसने कहा-अगर पार जाना चाहते हो तो मुझे मिलो। मैं उस महात्मा की तलाश करता था। जगह-जगह गया मगर वह महात्मा मुझे नज़र नहीं आया। किसी ने कहा-पण्डित फकीर चन्द का सत्संग होता है, वहां जाओ। मैंने आपको देखा। आप ही वह महात्मा थे। अब मैं सोचता हूं कि मैं तो गया नहीं तो मुझे विश्वास हो गया। क्योंकि जब मैं वहां नहीं था तो जो कुछ उसने पानी, प्रकाश फूल, और बत्तखें आदि देखा, वह क्या था ? उसकी अपनी सूक्ष्म प्रकृति, जिस प्रकार के ख्याल Suggestions and impressions उसके मस्तिष्क पर पड़े हुए थे वही उसके समक्ष शक्लें बन कर आये थे। यह जितना योग है, यह जिसकी प्रकृति जिस प्रकार

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

को है उसी प्रकार के दृश्य सामने आयेंगे। लाख सिर पटक कर मर जाये दूसरे दृश्य उसके समक्ष नहीं आयेंगे। क्योंकि प्रकृति ने जिस प्रकार की प्रकृति उस की बनाई हैं, उसी प्रकार का दृश्य उसको आयेगा। क्या किसी मुसलमान के अन्दर राम या कृष्ण प्रकट हुआ ? या किसी हिन्दू के अन्दर हज़रत मुहम्मद या अली प्रकट हुआ ? क्यों नहीं हुआ ? क्योंकि इनका संस्कार उन पर नहीं था। बस इतना ही भेद है। अत: राधास्वामी मत में पूरे गुरु की आवश्यकता है। पुस्तकों का ज्ञान काम नहीं करता। गुरु को ढूंढ़ो और गुरु को अपने अनुभव बताओ, वह तुमको तुम्हारी प्रकृति के अनुसार उस मंजिल तक पहुंचा देगा। यह आवश्यक नहीं है कि एक इन्सान को सारी मंजिलें या दृश्य जो पुस्तकों में लिखे हुए हैं, नज़र आयें परन्तु वो मंजिल पर पहुंच सकता है। जैसे मुझे पता लग गया कि यह मन का चक्कर है, अब मैं इसमें फंसता नहीं और मेरे लिए इस चक्कर की कोई आवश्यकता नहीं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

हंसन साथ करी जाय यारी, सुरत सखी हुई सब की प्यारी।

अब देखो, मैं इन हंसन को देखता २ मर गया। मेरी समझ में हंस क्या आये? मैं यह समझता हूं कि शरीर में खून में पानी Red Corpuscle or white Corpuscle हैं अगर वे खत्म हो जायें तो खून खून नहीं बल्कि पानी हो जायेगा। हमारे अन्तर में जो प्रकाश आता है उसके जो अणु या किरणें हैं यदि वे न हों तो वह Stage नहीं रहती। तो हमारे अन्तर में जो प्रकाश रूपी अणु पैदा होते हैं वे ही किरणें हमारे अन्तर में आती हैं वे हंस हैं। इस प्रत्येक किरण में मानवीय किरण मौजूद है। जिस प्रकार एक बड़ के बीज में एक वृक्ष मौजूद है और एक किरण में सारा सूर्य है। जब इनसे हम मिल जाते हैं तो हमारा मन साफ हो जाता है; उनके प्रभाव से हमारी वाणी अच्छी हो जाती है। हम उनके प्रभाव से सब से प्रेम कर लेते हैं, मैं ऐसा समझता हूं। मैं चाहता हूं कि राधास्वामी मत में जो गुरु है यह मुझे हिदायत करें। अगर मैं ग़लत हूं या उन्होंने हंस देखे हैं तो मुझे बतायें। मेरे अन्तर में भी पहले रूप नज़र आते थे। मगर जब मैं किसी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

के अन्दर होता। मैं कैसे मानूं कि कोई बाहरी हंस आदमी के अन्दर आते हैं। यह इन्सान के अपने ही मन का खेल है :—

सुन्न शहर में कुछ दिन वसी, फिर चढ़ ऊपर आगे धसी।

सुन्न शहर क्या है ? बेख्याली की हालत, निर्विकल्प अवस्था का नाम शून्य है। कुछ दिनों सैर करने के बाद जिनको आगे जाने की आवश्यकता होती है तो फिर वह सुरत आगे चलती है :—

महासुन्न एक नगर अपारा, कहूं कहा अचरज विस्तारा।

यह गहरी समाधि की अवस्था है :—

धुन यहां चार गुप्त अति झीनी,
सन्त विना कोई निरख न चीन्ही।

क्यों ? एक व्यक्ति गहरी नींद में चला जाता है। जब तक वह गहरी नींद में Conscious न हो वहां अन्धकार रहेगा। सन्त जो यह समाधि लगाता है वह गहरी नींद की हालत में रहता हुआ भी अपनी हस्ती का ज्ञान रखता है। क्योंकि

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

वह गहरी नींद में अपनी इच्छा से गया है। मगर कोई गहरी नींद में अपनी इच्छा से न जाये तो उसके लिए सब कुछ गुप्त है। यह चार धुनें क्या हैं? मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार। यह चार, जब गहरी समाधि में चला जाता है तो समाप्त हो जाते हैं यानि इकट्ठे हो जाते हैं। वहां जो व्यक्ति अभ्यास करता है उसको उस महापुरुष की Consciousness का ज्ञान होता है और ऐसा व्यक्ति जाग्रत अवस्था में भी सुषुप्ति का आनन्द लेता है :—

अचिन्त दीप ता दायें रहता सहज दीप दस पालंग बसता।

आहा! यह देखो, वे कहते हैं सहज दीप। सहज दीप का अर्थ क्या है? आदमी के अन्दर सहज अवस्था आ जाती है :—

महिमा दीप कहा कहुं भारी, सन्तोष दीप तहां बायें संवारी।

अब देखो, अर्थ यह है कि हमारे मन के अन्तर में वहां सन्तोष आ जाता है और सहजपन या सहज-वृत्ति आ जाती है तथा अचिन्तपना आ जाता है।

वाणियों को इतना रोचक बनाया गया है कि जिसकी कोई सीमा नहीं। जब इन्सान के मन की गहरी समाधि टूट कर चेतवान (Conscious) होकर आगे चलता है तो उसमें सहज अवस्था और सन्तोष आ जाता है। मैं ऐसा समझता हूं। अनुभव के आधार पर मैं मानने के लिए विवश हूं कि ऊपर के इस लोक में भी जो ऐसी आत्माएं रहती हैं उनमें संन्तोष और सहज अवस्था यानि शान्ति होनी चाहिए। ऊपर भी इसका कुर्रा है। वे जो मस्त आत्माएं वहां उस कुर्रे में कैद होती हैं उनकी मुक्ति का भी एक ज़रिया है और वह यह है कि जैसे इस कमरे में गन्दी वायु है, बाहर से जब अन्धेरी जायेगी तो वह इस गन्दी वायु को भी अपने साथ ले जायेगी। ऐसे ही सन्त की आत्मा जब निकलती है तो मेरे विचार में क्योंकि वह प्रकाश और शब्द स्वरूप होनी चाहिए, तो उस वातावरण से जब बह जायेगी तो जो आत्माएं वहां फंसी हुई होंगी; जो उसके सम्पर्क में आयेंगी वे उसकी रोशनी और ध्वनि के सहारे आगे

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

के खेल के खेल को ब्यान करने का ढंग है। क्योंकि यह जीवन भी एक बड़ा भारी खेल है, इसका अनुमान करके तुम इसको जितनी इच्छा हो अनुभव से बड़ा कर लो :—

तिस आगे मैदान दिखाना, सत्त लोक जहां पुरुष पुराना।

जब यह अवस्था समाप्त हो जाती है अर्थात् सुरत का नीचे आकर ऊपर जाना बन्द हो जाता है तो फिर ऐसी अवस्था आ जाती है जहां प्रकाश और शब्द के सिवाय कुछ नहीं। वृत्ति और विचार का नीचे आना बन्द हो जाता है। अभ्यास में फिर उसकी जो अवस्था हो जाती है वह हमारी अपनी आदि अवस्था है। सत्त लोक सत्त है; हमारा सत्तपना है, हम वहां सत्त हैं। सत्त लोक में सत्तपुरुष क्यों कहा गया है ? पुरुष में सकारात्मक शक्ति होती है स्त्री में नकारात्मक शक्ति होती है। क्योंकि वह हस्ती हैं। इसमें से शक्ति निकल कर सारे संसार को बनाती है इसलिए इस वस्तु का नाम पुरुष कह दिया है। पुरुष अर्थात् जिसमें उन्नति करने का और बढ़ने का तत्त्व मौजूद होता है :—

निज पद पाये पुरुष से मिली, देख गली आगे फिर चली।

आहा ! मैं कहा करता हूं कि प्रकाश और शब्द को देखता हूं फिर उसको, जो प्रकाश को देखता तथा शब्द को सुनता है, ढूंढ़ता हूं। इसका भाव यह है कि वहां सत्त में रहकर उस वस्तु की खोज करती हुई आगे को चलती है :—

अलख लोक में किया बसेरा, अगम लोक जाय डाला डेरा।

जब प्रकाश को देखता हुआ और शब्द को सुनता हुआ अप्रकाशन हो जाता है, इस अवस्था का नाम अलख, है जो लखा नहीं जाता। प्रकाश तो लखा जाता है। इसके बाद जो ज्ञान, अनुभव, experience होते हैं उसका नाम अगम हैं :—

शोभा वहां की क्या कह गाऊं, अरब, खरब शशि सूर लजाऊं।

उन्होंनें यह अनुभव से बताया है। यह सारा ब्रह्माण्ड यानि कुल, जितने ब्रह्माण्ड या लोक-लोकान्तर हैं, यह एक बड़े भारी तत्त्व से बनते हैं। तुम स्वयं भी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

देखो, कितने सूर्य हैं, कितने चांद हैं। कोई गिनती है? इस तरह से वह जो असली परम तत्त्व है उसमें तुम अन्दाज़ा लगा लो। अरब खरब, अनगिनत सूर्य, चांद हुए। यह होने का अनुभव है और ठीक है।

अब अनाम जहां रूप न नामा, सन्त करें जा वहां विश्रामा।

हम वहां से आये हैं जहां जीवन के यह बोधभान समाप्त हो जाते हैं। यह मतलब है बस :—

सुरत चेत पाया विसमाद, नहि जहां वाणी नहि जहां नाद।

अन्तिम मंजिल क्या है? वहाँ न वाणी है, न शब्द हैं और न रूप है। वह क्या है? एक अवस्था है। हम सब उसी से निकल कर आये हैं, उस में चले जायेंगे। what is life? लब खुले और बन्द हुए यह राज़े ज़िन्दगानी है।

आदि न अन्त अनन्त अपार,
सन्त का वह निज दरबार।
सन्त सभी वा घर से आये,
काल देश से जीव चिताये।

हम सब उसी देश से आए हुए हैं :—

जा चेते तिस ले पहुचावें, सुरत शब्द

स्वामी जी ने बारह मासे में चेतने से लेकर वहां धुर मालिके कुल तक का यह सारा हाल बताया है । जो संक्षेप में है कि जो आदमी अपने अन्दर चैतन्य हो कर अपनी इच्छा से गहरी नींद में जाकर अपने आप का अनुभव करता है उससे आगे वह जो कुछ देखता है; वह अनुभव करता है उससे भी आगे जाता है तब उसको पूर्ण ज्ञान होता है ? अर्थात् साधन, अभ्यास द्वारा शरीर से आगे जाओ, गहरी नींद में जाओ । गहरी नींद में चेतनता रहे तो इस दसवे द्वार के मार्ग से जाओ । तव इन्सान को आध्यात्मिक शान्ति मिलती है; उसकी कुरेद मिटती और तलाश समाप्त होती है और यह परा विद्या पाकर उसको फिर कुछ जानने की आवश्यकता शेष नहीं रहती । मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा । सो मैंने बता दिया मगर कोई दावा नहीं है कि जो कुछ मैंने समझा है यह अन्तिम है ।

श्री शिव नन्दन जी भारद्वाज अध्यक्ष, मानवता मन्दिर की ओर से सत्संग का उद्घाटन करते समय भाषण

श्री परम दयाल जी महाराज व मानव दयाल शर्मा एवं कृपा करके पधारे हुये महापुरुषों की सेवा में और जनता जर्नादन की सेवा में प्रणाम करता हुआ मैं इस मानवता महायज्ञ में एक छोटी सी आहुति अर्पण करने के लिए उपस्थित हुआ हूं। मानवता, आने वाली दुनिया का व्यापक धर्म होगा और होता रहेगा। केवल मानवता पर आने के सिवाय विश्वशान्ति का और कोई उपाय नहीं है, नहीं है और नहीं है। यही सब विद्वानों की राय है। आज कल भयग्रस्त दुनिया को विना मानवता के शान्ति प्राप्त करने का और कोई मार्ग दिखाई नहीं देता है। पूर्व और पश्चिम दोनों ओर यह

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जितना संसार है वह मानवता की ओर आँखें लगाये हुए है। परन्तु मानवता कोई ऐसी सरल वस्तु नहीं है। इसको धारण करना पड़ता है और अन्तःकरण में उतारना पड़ता है, तब यह अपना रंग दिखाती है :—

फ़रिश्तों से बेहतर है इन्सान बनना,
मगर इस में लगती है मेहनत ज़्यादा।

इस मानवता को यथार्थ करने के लिए एक छोटा सा उदाहरण मैं आपकी सेवा में रखता हूं। एक बार मैं गाड़ी में यात्रा कर रहा था। उसी गाड़ी में एक सफेद वस्त्रों वाले महात्मा भी यात्रा कर रहे थे, जो मेरे परिचित नहीं थे। कालेज के कुछ विद्यार्थी भी बैठे हुये थे जो उनकी वेष-भूषा को देख कर थोड़ी सी हंसी उड़ा रहे थे। जब गाड़ी कोई 30-40 मील आगे गई तो महात्मा जी ने, जो बड़े सरल तथा सादा थे, अपनी डायरी निकाली और कलम से कुछ लिखा। तो कालेज के विद्यार्थी कहने लगे कि यह बाबा तो शिक्षित मालूम होता है। देखें तो सही कि इसने क्या लिखा है। क्या देखते हैं कि उन्होने डायरी में लिखा आम्र वृक्ष

मेरा गुरु यानि यह आम का वृक्ष गुरु। मैंने नवयुवकों से कहा कि यह बुजुर्ग हैं। आयु वृद्ध हैं। हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता का यही प्रमाण है कि वह हमें यह कहती और यह सिखाती है कि जो अपने बड़े वुजुर्गों का आदर और सेवा करते हैं उनकी चार वस्तुएं हमेशा बढ़ती रहती हैं, ये चार वस्तुएं हैं, आयु, विद्या, यश और बल। जब मैंने उन नवयुवकों को बात English में कही तो उन्होंने ज़रा ध्यान से सुना। मैंने कहा महाराज जी! हमें इसका गूढ़ अर्थ समझाइये। कहने लगे; गाड़ी में चलते हुए मैंने देखा कि एक आम का वृक्ष है, फलों से लदा हुआ है। उसके ऊपर पक्षी बैठे हुये फलों का रसास्वादन कर रहे हैं, उसके नीचे धूप से बचने के लिए कितने ही पशु बैठे हैं और आस-पास में कितने ही लोग आम चूस रहे हैं और आनन्द ले रहे हैं। इसे देख कर मुझे ख्याल आया कि यह जीवन का आदर्श होना चाहिए। उस महात्मा जी ने आम के वृक्ष को देखने से अपनें अन्दर से यह विचार निकाले जो मुझे बहुत पसन्द आये। इसलिए मैं आपके साथ आज इस पवित्र

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

बैसाखी के पर्व पर share करता हूं । यह गुठली इसी दिन एक मामूली फैंकी हुई गुठली थी। अगर वही गुठली अपने आप को विषय-विकार की आग में जला देती तो खाक बन जाती । परन्तु उस गुटली ने कहा कि मैं मानवता के उदाहरण पर चलना चाहती हूं । मेरा Interest, मेरी evolution और मेरा विकास मानवता की ओर होता जाय और मानवता के सारे पर्व या महाभारत, के एक लाख श्लोक लिखन के वाद व्यासदेव जी महाराज कहते हैं कि यदि किसी के पास एक लाख श्लोक पढ़ने का समय न हो तो एक ही श्लोक मैं अन्त में लिख देता हूं जिसमें सारा सार आ जायेगा। वह क्या है :—

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं, श्रुत्वा चाप्य वधार्यताम्
आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत् ।

महर्षि व्यास जी फरमाते हैं कि सारी महाभारत का सार यह है कि जो बात आप अपने लिए पसन्द नहीं करते वह बात दूसरों के लिए भी पसन्द न करें। जो व्यवहार आप अपने लिए ठीक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

या उचित नहीं समझते वह व्यवहार कदापि दूसरों के साथ आप न करें। महात्मा ईसा भी यही सन्देश दे गये हैं कि Do unto others as you wish to be done by them. Never do unto others as you do not wish to be done by them.

तो आम की गुठली ने कहा—कि मैं अपना जीवन परोपकारमय तथा मानव सेवामय बनाना चाहती हूं। उसने अपना बलिदान देकर अपना सिर मिट्टी में घंसा दिया, मिट्ठी के नीचे चली गई और अपने आप को मिट्टी में मिला दिया कि :—

दाना खाक में मिल कर, गुलो गुलज़ार होता हैं।

उसने जो मिट्टी में रह कर, मिट्टी में घंस कर अपने आप को मिट्टी के बराबर किया, तथा प्रकृति ने उस में से कोंपल और अंकुर निकाला जिससे बढ़ते २, इधर, उधर से भोजन लेते हुए सेवा भाव में Inspire होते हुए वह बढ़ता गया। और बढ़ते २ वह आम का वृक्ष बना जिसकी साया में हज़ारों पशु और इन्सान शीतलता प्राप्त करते

रहे और उसके फलों का रस चूसते हुए उनको अत्अन्त आनन्द आया। तो यही मानवता का मार्ग है जो उस गुठली ने स्वीकार किया कि पहले :—

मिला दे खाक में अपने आप को जो मरतवा चाहे,
कि दाना खाक में मिल कर, गुलो गुलज़ार बनता है।

यही परम दयाल जी महाराज का सन्देश है कि ऐ मेरे भाइयो और बहनो ! मानवता के मार्ग पर चलते हुए जिस तरह उस आम की गुठली ने आत्मसमपर्ण करके अपने आप का जीवन सेवामय बनाया और संसार में बढ़ने के साथ ही उसने एक यह लगन नहीं छोडी कि मैं किसी के काम आऊं या मैं किसी की सेवा कर पाऊं तथा मेरा जीवन सार्थक हो जाये यानि स्वार्थमय जीवन उसने छोड़ा और अपने आप को मिट्टी में मिलाया। तो देखो, तो कैसा गुलो-गुलजार बन गया कि हजारों को आम चूसने को मिले और मनुष्यों तथा पशुओं को उसका साया प्राप्त करने को मिला। इस तरह तुम भी निष्काम काम करते हुए अपना जीवन सफल बनाओ और संसार का

भी भला करो। इसी उद्देश्य को लेकर स्वामी जी महाराज ने आगरा में सन्त अवतार धारण किया। उसी झण्डे को बुलन्द करने के लिए श्री परम-दयाल जी महाराज ने 95 वर्ष अपना जीवन इसी खोज में लगाया और आज उसकी सुगन्धि सारे संसार में फैल रही है और रहती दुनिया तक वह फैलती रहेगी।

वह सार सन्देश जो दाता दयाल जी महाराज के द्वारा परम दयाल जी महाराज के पास पहुंचा और इनके द्वारा उसकी बूंद आज कैनेडा, अमेरिका यूरोप और भारत के कोने २ में फैल रही हैं और जिनका आनन्द लेते हुए हम सब अपना जीवन सुखमय और शान्तिमय बना रहे हैं वह यही है कि :—

दाना खाक में मिलकर गुलो गुलज़ार होता है,
और इन्सान गुरु भक्ति अपना कर, सुरखरू
बाइख़्तियार होता है।

उसका क्रियात्मक रूप मैंने In my own humble way थोड़ा नम्रता पूर्वक समझाया है जिसे दाता-

दयाल महर्षि जी महाराज ने अपने एक शिष्य श्री हुक्म सिंह को जो अन्त समय तक उनकी सेवा में था बड़े सरल ढंग से जैसे कि महापुरुष बड़े गम्भीर विषयों को सरल करके बताया करते हैं, समझाया था और एक दिन मेरे पूछने पर कि दाता दयाल जी महाराज जिनका प्रकाश परम दयाल जी महाराज के द्वारा सारे संसार में प्रकाशित हो रहा हैं सार बात आपको क्या समझाते थे ? तो श्री हुक्म सिंह नें बड़े सरल और साफ ढंग से दाता दयाल का सन्देश मुझे सुनाया जो मुझे बहुत पसन्द आया। तो उसी के आदेशानुसार परम दयाल जी महाराज ने यह मिशन चलाई हैं और उससे लम्बे चौड़े संसार में इसी उद्देश्य की सुगन्धि फैला रहे हैं जिसका आने वाले समय में प्रभाव बढ़ता जायेगा। यही हमारी पूर्ण आशा है कि यह मानवता का झण्डा उच्च से उच्चतर और उच्चतर से उच्चतम होता जायेगा। वह यह हैं कि मनुष्य के अन्दर एक नहीं बल्कि दो शक्तियां काम कर रही हैं। दयाल या मालिक चोटी के मुकाम पर विराजमान है। धुर नीचे मूलाधार के मुकाम पर काल कुण्डलिनी मारे हुए बैठा है। ये

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

दोनों शक्तियां शब्द रूप हैं। मन रूपी जीव बीच में भूमध्य में है जो दोनों की सुनता है। यह मन जिस से दुनिया इतनी तंग आई हुई है, जड़ है यानि इसमें अपनी शक्ति नहीं है बल्कि इसे इन दोनों शक्तियों में से किसी एक शक्ति को आधार या इष्ट बना, किसी एक को भज, उसका हो, किसी एक की सुन व उसको पकड़। उसके पीछे लग कर व बन्धकर यह द्वन्द्व का काम करता है। यदि मनुष्य चौकस, सुचेत, सुजाग्र, तमीज व विवेक और अनुभव से दयाल की आवाज सुने; पकड़े व इसका अभ्यास सीख ले तो इस अभ्यास से वह आसानी से निवृत्ति मार्ग में आ परमार्थ या अपने स्वरूप को प्राप्त कर सकता है। मगर इस Self realization के लिए हर समय साधन करना होगा और ऊपर की ओर खिंचते, बढ़ते जाना होगा तभी उसे यह सफलता प्राप्त होगी।

हो जुस्त जू यही के खूब से खूबतर कहां।

इस वास्तविकता (reality) या गुरु की आवाज को जो तुम्हारे अन्दर है इसका ज्ञान रखकर उसको Surrender करना, उसके शरणागत हो रहना, उसका विश्वास करना और इस पर चलना ही

सन्तमत की तमाम शिक्षा की नींव है। जिसके अनुसार मानवता का रास्ता यह है कि स्वार्थपने का जीवन छोड़ कर परमार्थ के लिए जीओ और निष्काम सेवा करो। इस से इन्सान को मान व आदर मिलेगा और फिर आगे उसका अज्ञान दूर होकर उसे अपने स्वरूप का ज्ञान हो कर मनुष्य जीवन का परम अर्थ प्राप्त हो जायेगा। गीता में भी भगवान कृष्ण ने अर्जुन को सारी गीता सुनाने व विराट् रूप दिखाने के बाद, अन्त में यही कहा हैं कि ऐ अर्जुन! मैंने जो कुछ समझाना था सब तुमको समझा दिया। अब निर्णय करना और रास्ता चुनना तेरे आत्म विवेक पर ही निर्भर है जिसके अधिकार के लिए तुम स्वतन्त्र हो।

यह काल, दयाल का खेल रूपी कौरव और पाण्डव का महाभारत युद्ध रात दिन हमारे हृदय में सदैव होता रहता है। इसके जीतने के लिए जागो और अन्तर्मुखी होकर Self control and self reverence knowledge यानि अपने आपको जानो, अपनी कदर करने और अपने स्वरूप को पाने के मार्ग पर चलो। मानवता का सन्देश यही हैं कि

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सिलसिले में फंस गया। केवल एक खुशी है कि इस फंसाव में मैंने निज स्वार्थ अर्थात् धन, मान प्रतिष्ठा आदि नहीं रखा।

मन्दिर में तीन हस्पताल हैं, शिशु स्कूल, प्रेस, लायेब्रेरी और फ्री लंगर है। खर्चे बहुत बढ़ गये हैं। लगभग 4500 रुपये हर महीने कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है। 70000 रुपये की दवाइयां हस्पताल में दी गई हैं। शिशु स्कूल में बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती। आगे सेहत अच्छी थी तो बाहर दौरा करता था। कुछ तो सच्चाई ब्यान करने का अपना कर्तव्य पूरा करता था और कुछ मन्दिर के लिए रुपया जो कोई खुशी से देता ले आता था। अब शरीर अधिक काम नहीं कर सकता। यदि मेरा साहित्य पढ़ने वाले समझते हैं कि मेरा काम प्रायः सब अधिकारी जनता के लिए लाभदायक है, तो जो इच्छा हो मन्दिर की सेवा करें।

तमाम साहित्य जो मन्दिर से प्रकाशित होता है, डाक खर्च सहित मुफ्त जाता है। मन्दिर पुस्तकों

की सूची प्रकाशित कर देता है जो चाहें मुफ्त मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि जो सज्जन मेरे विचारों से सहमत हैं वे अपना जीवन क्रियात्मक बनायें। पुस्तकें या सत्संग केवल मन के भ्रम, शंकाएं दूर कर सकते हैं। यदि अमल नहीं है तो यह पढ़ना लिखना भी एक प्रकार की खुशी देगा, असली शान्ति नहीं मिलेगी। अधिक क्या लिखूं चले-चलाओ का समय है, मैंने वसीयत (Will) कर दी है कि मेरे बाद शर्मा दयाल जिन का पूरा नाम डाक्टर ईश्वर चन्द्र शर्मा है(जो अमेरिका में हैं) और मुन्शी-राम भगत,मानवता और आध्यात्मिकता का प्रचार करेंगे मन्दिर का सारा काम ट्रस्ट वालों के आधीन है। ट्रस्ट वालों को कह चला हूं कि अगर किसी समय आर्थिक सहायता न मिलने के कारण काम न चल सके तो हस्पताल आदि बन्द कर दें; केवल प्रकाशन का काम जारी रखें। अगर यह भी न चल सके तो दाता दयाल जी महाराज का (Statue) धरती में गाढ़ दें और मन्दिर की सारी सम्पत्ति सरकार किसी और संस्था को दे दे।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਨਾਮ ਦਾਨ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints,
15. Nam Dan. 16. Autobiography of Faqir.

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1) अगम का भेद। 2) अनुभवसार।

—o◡o—

अध्याय पांचवां

फ़कीर बाबा की संक्षिप्त जीवनी

पिछले अध्याय में बताया जा चुका है कि ईश्वर अनादि और अनन्त है । मानवमात्र का अनेक धर्मों और मत-मतान्तरों में बंट जाने का एक विशेष कारण यह भी है कि ईश्वर और उसके ज्ञान की अनन्तता की ओर ध्यान नहीं दिया गया । सारे ब्रह्माण्ड में यह पृथ्वी एक छोटा सा ग्रह है और ब्रह्माण्ड ईश्वर की शक्ति की एक बूंद से ही निकला है। हम; इस पृथ्वी पर रहने वालों को पैगम्बरों, ऋषियों और सन्तों के द्वारा ईश्वर का आंशिक ज्ञान, इतिहास के आरम्भ से ही मिलता रहा है। ईश्वर का पूरा ज्ञान आज तक किसी को नहीं मिला और न ही मिल सकता है, क्योंकि ईश्वर अनन्त है और उसका ज्ञान भी अनन्त है। जो लोग यह दावा करते हैं कि उन्हें ईश्वर का पूरा ज्ञान है; ये सही नहीं हो सकते । फ़कीर बाबा अपने हर सत्संग

और लेखों में इसी बात पर ज़ोर देते हैं कि उनका ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान अन्तिम या पूर्ण नहीं है और न हीं आज तक कोई ऐसा व्यक्ति पैदा हुआ है जिसे अनन्त ईश्वर के ज्ञान का पूरा पता चला हो। फ़कीर बाबा कहते हैं कि मनुष्य को मानव धर्म का पालन करते हुए, मन को शुद्ध रखते हुए, अपने धर्म का पालन करते जाना चाहिए। धर्म के सन्दर्भ में उनका दृष्टिकोण अनेकत्व का न हो कर एकत्व का है, इसलिए ही तो उन्होंने अपने धर्म का नाम मानवता धर्म रखा है और अपने आश्रम का नाम मानवता आश्रम। धर्म की संकीर्णता ने मनुष्य जाति को टुकड़ों-2 में बांट दिया है; इसलिए फ़कीर बाबा कहते है हमें इस तंगदिली के धर्म से ऊपर उठना चाहिए। उनके विचार स्वामी विवेकानन्द के इस वाक्य की पूर्ति करते हैं। "किसी विशेष धर्म में पैदा होना पाप नहीं है, किन्तु उसी की सीमा में ही मर जाना मूर्खता है।"

फ़कीर बाबा का जन्म एक सत् पुरुष के रूप में हमारे समय की आवश्यकताओं के अनुसार हुआ

है। भगवद्गीता में कहा गया है कि ईश्वरीय शक्ति समय के अनुसार विशेष प्रकार के अवतार का कारण बनती है। फ़कीर बाबा का जन्म सचमुच ही हमारे समय की आवश्यकताओं के अनुसार हुआ है वह अनेक बार कहते हैं, "मैं सत्य का अवतार हूं।" ये शब्द सम्भवतया उनके अन्तस् से ही निकलते हैं; जिनका सम्बन्ध उनके व्यक्तित्व के उस अंग से है; जिसे मूल आधार या दयाल कहा गया है। यह तत्त्व न मरता है, न जन्म लेता है, वास्तव में यही अविनाशी तत्त्व सारी कुदरत का स्वामी है। फ़कीर बाबा स्वयं अपनी जीवनी की संक्षिप्त व्याख्या देते हुए लिखते हैं :—

"मैं पंझाल नामक गाँव में १८ नवम्बर १८८६ में पैदा हुआ। यह तो भौतिक जन्म का हवाला है वास्तव में तो मैं अविनाशी हूं, जन्म-मरण से परे।"

फ़कीर चन्द का हिन्दी में शाब्दिक अर्थ है संन्यासी तथा उर्दू में साधु का प्रकाश। आम तौर पर लोग अपनी सन्तान को ऐसे नाम देते हैं जिनका

सम्बन्ध धन, सम्पत्ति, शक्ति अथवा यश से हो। परन्तु फ़कीर का मतलब तो वह व्यक्ति होता है, जिसके पास धन, सम्पत्ति तथा यश कुछ भी नहीं होता, जिसने संसार की वस्तुओं का त्याग कर दिया हो। ऐसे लगता है कि, फ़कीर बाबा के माता पिता ने उनका नाम अचानक फ़कीर नहीं रखा था, बल्कि प्रकृति इस नाम के द्वारा बालक के प्रति भविष्य-वाणी करा रही थी। बालक फ़कीर बचपन से ही एक फ़कीर स्वभाव के थे। उनके इसी नाम के कारण ही फ़कीर बाबा के पूज्य गुरु दाता दयाल श्री शिवव्रत लाल जी महाराज ने जो कि एक उच्च कोटि के विद्वान् तथा कवि थे, फ़कीर बाबा पर ज्ञान से भरपूर अनेकों ऐसी कविताएं लिखीं, जिनमें अति गूढ़ तत्त्व है। इन कविताओं का 'फ़कीर भजनावली' नामक पुस्तक में संकलन है; जो पढ़ने योग्य है। दाता दयाल ने इस भावी सद्गुरु के बिषय में यह कहा था कि यह महान् आत्मा वास्तव में परम तत्त्व है; जिसने फ़कीर का रूप इसलिए धारण किया है कि वह दुःखी जीवों को परम धाम की ओर ले जाये। १९२१ में दाता दयाल ने फ़कीर चन्द

को असली फ़कीर बनने का उपदेश देते हुए लिखा था :—

"तू फ़कीर बन, तू फ़कीर बन;
तू फ़कीर बन भाई ।
मैं भी तरूं फ़कीर चरण लग;
फ़कीर महा सुख दाई ।
मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक;
ईश ब्रह्म नहीं जानूं ।
मैं हूं नाम फ़कीर दीवाना;
सब से बढ़ कर मानूं ।"

अपने नाम के अनुसार ही बालक फ़कीर चन्द में शुरू से ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति थी । सात वर्ष की छोटी सी आयु में ही वह ईश्वर की खोज में लग गये । ब्राह्मण वंश में पैदा होने के नाते तथा अपने माता पिता को नित्य पूजा पाठ करते देखते हुए कोई भी बालक पूजा पाठ की ओर आकर्षित हो सकता है । ऐसा प्रायः पुरोहितों के बच्चों के साथ होता है । परन्तु फ़कीर चन्द के पिता जन्म से ब्राह्मण होते हुए भी व्यवसाः

फ़कीर जीवन चरित्र—पृष्ठ 45

से पुरोहित नहीं थे, बल्कि एक सिपाही थे। फ़कीर बाबा अपने पिता के विषय में लिखते हैं । "मेरे पिता जी का स्वभाव कुछ तो सिपाही के नाते और कुछ घर की माली हालत अच्छी न होने के कारण सख्त था और वह परिवार के साथ सख्ती का व्यवहार करते थे। बालक फ़कीर चन्द पिता के इस कठोर शासन से राहत पाने के लिए ईश्वर भक्ति की ओर लग गये । उनकी माता एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं । वह नित्य प्रति अपने परिवार के ठाकुरों की बड़ी श्रद्धा से पूजा किया करती थीं। बालक फ़कीर चन्द अपनी माता को रोज़ ठाकुरों की पूजा करते हुए देखते थे, परन्तु उनकी अपनी पूजा केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं थी। वह छोटी सी आयु में भी ईश्वर की पूजा मानसिक रूप से करते थे । उन्होंने रामायण और महाभारत को कई बार पढ़ा। इन ग्रन्थों से प्रभावित हो कर वह भगवान् के अवतार राम तथा कृष्ण से बहुत प्रभावित हुए और उनके साक्षात् दर्शन करने की लालसा बालक फ़कीर में प्रबल हो उठी।

फ़कीर चन्द जी की माता कई बार ठाकुरों

की पूजा का भार बालक फ़कीर को सौंप देती थीं। किन्तु बालक फ़कीर ठाकुरों को नहलाने, टीका लगाने तथा सजाने के स्थान पर उनकी पूजा मन से ही कर लेते और माता को कह देते कि उन्होंने ठाकुरों की पूजा तथा अभिषेक कर दिया है। परन्तु माता यह शिकायत करतीं कि बालक फ़कीर झूठ बोलते हैं; क्योंकि ठाकुरों पर धूल जमी हुई होती थी, इससे यह प्रमाणित होता था कि उनको नहलाया नहीं गया। किन्तु बालक फ़कीर चन्द सदा यह कहते थे कि उन्होंने ठाकुरों की असली पूजा की है।

किशोर फ़कीर चन्द ने भगवान् राम तथा कृष्ण के साक्षात् दर्शन किये और कई चमत्कारी घटनाओं का अनुभव किया। परन्तु ऐसे-२ असाधारण अनुभवों के होने के बाद भी वह निरन्तर साधना में लगे रहे और परम-तत्त्व के आधार को ढूंढ़ने के यत्न में लगे रहे। सच्चे ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध में जो उन्हें अनुभव हुए; वे बिना बड़े-२ ग्रन्थों के पढ़े ही हुए।

फ़कीर बाबा की शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक ही रही; और यह शिक्षा उन्होंने पंजाब के ज़िला जेहलम के एक कस्बे पिण्ड दादन खान (जो अब पाकिस्तान में है) में पाई। उनके पिता उस समय महकमा रेलवे की पुलिस में वहीं काम करते थे। घर की माली हालत अच्छी न होने के कारण वह फ़कीर चन्द को ऊंची शिक्षा नहीं दिला सके। इसी कारण किशोर फ़कीर चन्द ने १९०४ में भारतीय रेलवे के कन्स्ट्रक्शन विभाग में सिगनेलर के पद पर काम करना आरम्भ किया। वह बड़े ही परिश्रमी थे, अपने खाली समय में वह पास वाले रेलवे स्टेशन पर जा कर, वहां के तार बाबू की देख-रेख में तार भेजने की कला का अभ्यास करते थे। इस शिक्षा के कारण, थोड़े ही समय में उन्हें भारतीय रेलवे विभाग में सहायक स्टेशन मास्टर नियुक्त कर दिया गया। शीघ्र ही अपनी ईमानदारी तथा मेहनत के कारण वह स्टेशन मास्टर के पद पर पहुंच गये।

फ़कीर बाबा कहते हैं आन्तरिक उन्नति के लिए अर्थात् आत्मिक पूर्णता पाने के लिए मेहनत

और सच्चाई का जीवन अति आवश्यक है। माता पिता के प्रति; पति पत्नी के प्रति, सन्तान के प्रति, समाज के प्रति, देश और विश्व के प्रति अपना कर्त्तव्य सच्चाई, ईमानदारी तथा दिल से निभाना चाहिए। कोई भी काम केवल इसलिए मत करो कि वह तुम्हें करना ही है, बल्कि उसमें रुचि ले कर करो। जो सन्त अथवा गुरु अपनी आत्मिक सिद्धियों को धन, मान और नाम के कमाने के लिए प्रयोग करने लगता है, वह कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। फ़कीर बाबा ने अपनी इस ९५ वर्ष की आयु तक लाखों दुःखी जीवों को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ पहुंचाया है और निरन्तर पहुंचा रहे हैं, परन्तु उन्होंने अपनी गुरुआई को कभी धन कमाने का साधन नहीं बनाया। अपने निजी खर्चे के लिए सदा अपने ही परिश्रम की कमाई खाई है।

भारतीय रेलवे विभाग से रिटायर होने के पश्चात् भी उन्होंने काफी समय तक मिलिट्री में एक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

यहाँ पर उनके जीवन की एक घटना का उल्लेख करना अति आवश्यक है। यह घटना उस समय की है, जब वह पहले विश्व युद्ध में ईरान में वर्त्तानवी फ़ौज में तार के विभाग में काम करते थे। उस समय काम करते समय जब वह कोई ग़लती करते थे तो उसे सरकारी रजिस्टर में लिख देते थे। जब एक दिन एक अंग्रेज़ उच्च अधिकारी उनके काम का निरीक्षण करने के लिए आया तो रज़िस्टर में लिखित उनकी भूलों के बारे में पढ़ कर दंग रह गया। प्राय: मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता यह होती है कि वह कभी अपनी भूलों को स्वीकार नहीं करता। यहां पर बात बिलकुल विपरीत थी। वह अंग्रेज़ उच्च अधिकारी दंग रह गया और फ़कीर बाबा की ईमानदारी से प्रभावित हो कर बोला, "फ़कीर चन्द ! तुम अपनी भूलों को स्वयं ही रजिस्टर में क्यों लिखते हो ? फ़कीर बाबा ने उत्तर दिया, मैंने सचमुच में ही ये भूलें कीं और मैं यह

फ़कीर जीवन चरित्र-पृष्ठ 95

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जानना चाहता हूं कि मनुष्य भूल क्यों करता है। बहुत प्रयत्न करने के पश्चात् भी और सच्चाई से काम करने के पश्चात् भी मुझ से भूलें हो ही जाती हैं। क्या आप मुझे यह बता सकते हैं कि मनुष्य भूलें क्यों करता है?" वह उच्च अधिकारी फ़कीर बाबा के इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे सका।

उस निरीक्षण के एक दो दिन पश्चात् ही फ़कीर बाबा को सरकारी तार मिला कि उन्हें पहले पद से ऊंचे पद पर तरक्की दी गई है। दूसरे या तीसरे दिन उस अंग्रेज उच्च अधिकारी ने फ़कीर बाबा से टैलीफोन पर बात करते हुए कहा, "मिस्टर फ़कीर चन्द क्या यह जानते हो कि तुम्हें यह तरक्की क्यों दी गई है?" फ़कीर बाबा चुप रहे उन्हें कोई उचित उत्तर नहीं सूझा। अंग्रेज अधिकारी ने बात को जारी करते हुए हंस कर कहा, "तुम्हें तुम्हारी भूलें करने के लिए ही तरक्की दी गई है। फ़कीर बाबा के सच्चे प्रश्न कि "मनुष्य भूलें क्यों करता है" का अत्यन्त सफल उत्तर मिला।

पण्डित फ़कीर चन्द का विवाह तेरह वर्ष

की छोटी आयु में ही हो गया था परन्तु पत्नी का देहान्त कुछ वर्षों के पश्चात् एक बीमारी से हो गया; फिर उनका दुसरा विवाह हुआ। अपने जीवन की घटनायों का उल्लेख करते हुए, वे युवावस्था की भूलों को भी सब को बताते हैं हालांकि वे भूलें बहुत नहीं हैं। इन भूलों को करने के पश्चात् ही उन्होंने बहुत ही पवित्र और उत्तम जीवन व्यतीत किया। अपनी पत्नी तथा सन्तान के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए भी वे साधना और लोक कल्याण में लगे रहे। युवावस्था की भूलों के सम्बन्ध में फ़कीर बाबा के शब्द इस प्रकार हैं :—

"इस कोमल आयु में मेरा सम्पर्क रेलवे के अफसरों, प्लेटियरों और विभाग के ठेकेदारों से रहा। वे सभी मांसाहारी थे और उनकी संगति का मुझ पर भी प्रभाव पड़ा और मैं भी कभी-२ मांस खानें लगा। मैंने केवल माँस ही नहीं खाया, अपितु उनकी संगति के प्रभाव में आ कर तीन बार रम शराब पिया, एक बार जुआ खेला तथा एक बार वेश्या के पास भी गया।

१९०४ का एक बहुत ठण्डा जाड़े का दिन था। पिछली रात को कांगड़ा जिला में भारी भूकम्प आया था और असंख्य व्यक्ति मारे गये थे। मेरा चचेरा भाई, जो मेरे पास आया हुआ था प्रात: उठा उसने इस कड़ाके की सर्दी में भी ठण्डे पानी से स्नान किया और पूजा पाठ का नित्य का कर्म किया। इस के पश्चात् उसने खाना पकाया और फिर हम दोनों खाना खाने के लिए बैठ गये। उसी समय रेलवे स्टेशन से एक कर्मचारी आया, उसने पके हुए मांस की एक तश्तरी मेरे सामने रख दी। मेरा चचेरा भाई बड़ा धार्मिक विचारों का था, उसने कभी मांस को छुआ तक भी नहीं था, उसे उस पके हुए मांस की गन्ध बहुत बुरी लगी। उसने घृणा से अपना नाक और मुंह बन्द कर लिया और दूर से ही मेरी थाली में दो रोटियां फैंकीं। इससे मेरे मन में एक अजीब उथल-पुथल हुई। मैं इस घटना की उपेक्षा नहीं कर सका। मेरे मन में एक विचार धारा चलने लगी और मैं अपने आप से ही वाद-विवाद करने लगा। मैंने सोचा, 'देखो! एक ओर तो मेरा यह चचेरा

भाई है, जो एक शुद्ध और धार्मिक जीवन बिता रहा है और दूसरी ओर में हूं जिसके कर्म अपवित्र हैं। ऐसा क्यों है ? लगातार आधे घण्टे तक मेरे मन में यह संघर्ष चलता रहा कि सामने रखे हुए मांस को मैं खाऊं या नहीं खाऊं । एक ब्राह्मण के लिए मांस खाने से बड़ा पाप और क्या हो सकता है। अन्त में मैंने मांस न खाने का फैसला किया, मांस की तश्तरी को बाहर फेंक दिया और फिर छः महीने तक मांस नहीं खाया। इन छः महीनों के दौरान में मैं पश्चात्ताप की अग्नि में जलता रहा परन्तु बुरी संगत के प्रभाव से मैं अपने आप को फिर भी अलग नहीं रख सका और एक रात को अपनी काम वृत्ति की तृप्ति के लिए वेश्या के पास गया। उसके पश्चात मुझे अपनी गिरावट पर रोना आया और दूसरे ही दिन मैंने पिता जी को एक पत्र लिखा कि मेरे से यह ग़लती हुई है इसलिए मेरी पत्नी को मेरे पास रहने के लिए भेज दें।

पिता जी ने मेरे अनुरोध पर ऐसा ही किया। एक दिन मैं बाहर घूमने के लिए जा रहा था। मेरे

साथ एक गांव का चौधरी था । रास्ते में मांस खाने के लाभ तथा हानियों पर वाद-विवाद चलने लगा । चौधरी ने मांस खाने के पक्ष में इतनी अच्छी दलीलें दीं कि मैं छः महीने पूर्व अपने मांस न खाने के निर्णय को भूल गया और सोचने लगा मांस खाना कोई पाप नहीं है । चौधरी ने अलग होते समय मुझे एक मुर्गा दिया । मैंने उसे एक चौथे दर्जे के कर्मचारी को दे दिया और उसे कहा कि वह इसे काट कर साफ़ करके लाये । उसने ऐसा ही किया । मैं मुर्गे का कच्चा मांस घर ले कर गया और अपनी पत्नी को उसे पकाने के लिए कहा । मेरी पत्नी जो पूरी तरह से शाकाहारी थीं, को यह काम करना अच्छा नहीं लगा, परन्तु पत्नी होने के नाते उन्होंने मेरी आज्ञा का पालन करना चाहा । मेरी माता जी को जब यह पता चला कि मुर्गा रसोई में पकाया जायेगा, तो उन्होने रसोई के अन्दर घुस कर अन्दर से कुण्डी लगां दी ताकि मेरी पत्नी मुर्गा पकाने के लिए रसोई घर में न घुस सकें । मेरी पत्नी ने बार-२ माता जी से प्रार्थना की कि वह दरवाज़ा खोल दें, परन्तु मेरी माता जी ने दरवाज़ा

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

नहीं खोला। तब मैंने तथा मेरे भाई ने दरवाज़े को ज़ोर-२ से खटखटाया और उनसे दरवाज़ा खोलने की प्रार्थना की, किन्तु माता जी ने हमारी एक भी नहीं सुनी। तब अचानक मैंने रसोई घर से धुआँ निकलते हुए देखा। मैं डर गया, मैं कुल्हाड़े से दरवाजे को तोड़ कर अन्दर घुसा। क्या देखता हू कि माता जी का धुएं के मारे दम घुट रहा था। मैं उन्हें खीच कर बाहर ले आया और प्यार से भरपूर बार-२ उन का आलिंगन करते हुए कहा, 'मां, तुमने दरवाज़ा क्यों नहीं खोला, यदि धुएं की घुटन से तुम्हारी मृत्यु हो जाती, तो मैं अपनी परम प्यारी मां को कहां से लाता। माता जी ने क्रोध में आ कर ऐसे ज़ोर से धक्का दिया कि मैं नीचे गिर गया परन्तु मां के प्रति मेरा प्रेम कम नहीं हुआ। मैंने उठ कर प्रेम से फिर उनका आलिंगन करते हुए पूछा कि वह मुझसे नाराज़ क्यों हैं। इस पर उन्होंने कहा, 'फ़कीर! तुमने एक माता के बच्चे की हत्या की है, उसकी माता मुर्गी अपने बच्चे की हत्या पर विलाप कर रही होगी। तुमने एक महापाप किया है।'

इस घटना से मैं अपने आप को बार-२

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

धिक्कारने लगा और फिर दृढ़ निश्चय किया कि अब मैं कभी मांस नहीं खाऊंगा । उस समय से ले कर आज ९५ वर्ष की आयु तक मैंने कभी मांस को नहीं छुआ और ऐसा कोई कर्म नहीं किया जो धर्म तथा मानवता के विरुद्ध हो । इसमें कोई सन्देह नहीं कि युवावस्था में मैं कामवृत्ति को दबा नहीं सका; परन्तु इस कामवृत्ति की तृप्ति के लिए मेरी पत्नी मोजूद थीं ।

नौकरी तथा गृहस्थी के भार को ठीक तरह से निभाते हुए फ़कीर बाबा की यह प्रबल इच्छा बनी रही कि वह ईश्वर के साक्षात् दर्शन करें और उन से अपने पापों की क्षमा मांगें । फ़कीर बाबा के शब्दों में, 'मैंने अपने पहले किये गये चार पापों के प्रायश्चित्त के लिए भगवान् राम और कृष्ण से निरन्तर प्रार्थना की । मैं प्रार्थना करता था, रोता था और रोने के पश्चात् फिर भी प्रार्थना करने लगता था । मैं ऐसा इसलिए करता था, क्योंकि मैं चाहता था कि इन पश्चात्ताप के आंसुओं से मेरा मन शुद्ध हो जाये ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

यद्यपि मैं लगातार रो-रो कर प्रार्थना करता रहा, फिर भी मेरे वे चार पाप मुझे दुःख देते रहे और मैं अनेक बार बिलकुल अशान्त हो जाता था एक चांदनी रात की घटना है। आधी रात का समय था। मैं ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था और बुरी तरह से रो रहा था। इतने में क्या देखता हूं कि एक सफ़ेद दाढ़ी वाला बूढ़ा साधु अपने हाथ में तम्बूरा लिए, मेरे सामने खड़ा है। उसने बड़े प्यार से मुझे कहा, 'प्यारे बालक ! तुम रो क्यों रहे हो' ? मैंने उत्तर दिया, 'मैंने चार महापाप किये हैं। मैं ने हिन्दु ग्रन्थों में पढ़ा है कि ईश्वर इस पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में अवतार लेते हैं। मैं भगवान् राम के दर्शन करना चाहता हूं और उनसे अपने चारों पापों के लिए क्षमा मांगना चाहता हूं।' उस सफ़ेद दाढ़ी वाले साधु ने उत्तर दिया, हे बालक ! तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे लिए इस पृथ्वी पर मनुष्य का रूप धारण किया हुआ है, तुम जल्दी ही उनके सम्पर्क में आओगे और तुम्हें क्षमा मिल जायेगी।' ये शब्द कहने के पश्चात् वह साधु अदृश्य हो गये। इस घटना के पश्चात् भगवान्

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

के साक्षात् दर्शन करने की मेरी बेचैनी और भी बढ़ गई ।

इसी दौरान में मुझे भारतीय रेलवे विभाग में बागां वाले रेलवे स्टेशन पर सहायक स्टेशन मास्टर की पक्की नौकरी मिल गई । परन्तु ईश्वर के साक्षात् दर्शन करने की मेरी लालसा कम नहीं हुई बल्कि दिन प्रति दिन बढ़ती चली गई । एक दिन तो मैं भगवान् के दर्शनों के लिए चौबीस घण्टे तक रोता रहा । सब लोग घबरा गये, डाक्टरों को बुलाया गया और उन्होंने मुझे दवाइयां आदि दीं । प्रात: 5 बजे के लगभग मुझे महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के स्वप्न में दर्शन हुए । उन्होंने एक पास वाले कुएं से पानी निकाल कर मुझे नहलाया और उसके बाद अपना लाहौर का पता बतलाया । इसी समय मेरे पिता भी वहां आ गये और मेरे विरूद्ध महर्षि जी से शिकायतें करने लगे । मैं अभी इस स्वप्न का आनन्द ले ही रहा था कि इतने में चौकीदार ने मुझे आ कर जगा दिया और मेरा स्वप्न टूट गया । इस अनुभव से मुझे पूरा विश्वास हो गया कि ईश्वर ने महर्षि

शिवव्रत लाल जी के रूप में अवतार लिया है।"

इस घटना से प्रेरित हो कर फ़कीर बाबा महर्षि शिवव्रत लाल जी को लाहौर के पते पर, दस महीने तक सप्ताह में एक पत्र लिखते रहे किन्तु उनके एक भी पत्र का उत्तर नहीं आया। अन्त में वह जिस प्रकार महर्षि जी के सम्पर्क में आये उसका उल्लेख फ़कीर बाबा के शब्दों में इस प्रकार है :—

"मैंने हर सप्ताह दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी को स्वप्न में बताये गये उनके पते पर दस महीने तक कई पत्र लिखे, किन्तु उनका कोई भी उत्तर नहीं आया। मैं सदा उनको ईश्वर सम्बोधन कर के लिखता था। पूरे 10 महीने के पश्चात् दाता दयाल जी का एक पत्र मुझे मिला, जिसमें उन्होंने लिखा था, "फ़कीर मुझे तुम्हारे सभी पत्र लगातार मिलते रहे हैं। मैं तुम्हारी लगन तथा ईश्वर सम्बन्धी भावनाओं का सम्मान करता हूं। मुझे स्वयं राधा-स्वामी मत के प्रमुख, राय साहब सालगराम जी की कृपा से परम सत्ता का सत्य रूप और शान्ति मिली है।

यदि तुम्हें इस मार्ग पर चलने में कोई आपत्ति न हो तो तुम मेरे पास लाहौर आ जाओ।' इस समय तक मेरी ईश्वर को मनुष्य के रूप में मिलने की इच्छा चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी।"

महर्षि जी के पत्र को पा कर फ़कीर बाबा के आनन्द का पारावार नहीं रहा और वह जल्दी से जल्दी लाहौर जाने की सोचने लगे। उन्होंने कुछ सप्ताह पहले छुट्टी के लिए एक दरख़ास्त दी हुई थी। जिस दिन महर्षि जी का पत्र आया, उसी दिन ही फ़कीर बाबा की छुट्टी मंजूर होने की खबर आ गई और सरकार द्वारा भेजा गया एक दूसरा सहायक स्टेशन मास्टर उनके स्थान पर काम करने के लिए भी आ गया। फ़कीर दयाल जी ने इस पूरे प्रबन्ध को महर्षि शिवब्रत लाल जी की कृपा समझा और उनके दर्शनों के लिए उसी दिन ही लाहौर के लिए रवाना हो गये।

महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज पूर्ण गुरु और सन्त थे। उनमें विलक्षण प्रतिभा थी। वह उच्च कोटि के लेखक, मानववादी और नम्र

महात्मा थे। उन्होंने अपनी प्रतिभा, दर्शन और आध्यात्मिकता की वर्तमान भारत पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उनके द्वारा लिखा हुआ दार्शनिक और धार्मिक साहित्य बहुत विपुल है। उन्होंने अपने जीवन में जो लगभग पाँच हज़ार लेख, पुस्तकें, कविताएँ तथा पत्रिकाएँ लिखीं वे न ही केवल उनकी विद्वत्ता की साक्षी हैं, बल्कि वैज्ञानिक साहित्य का एक ऐसा भण्डार हैं, जिसके पढ़ने से मनुष्य को सच्चा ज्ञान प्राप्त हो सकता है और मानव मात्र को धर्म की कट्टरता और अन्धविश्वास से बचा सकता है। फ़कीर बाबा ने महर्षि जी को मिलने से पूर्व न तो उनके विषय में कुछ सुना था और न ही उनका साहित्य पढ़ा था। इसलिए उनकी महर्षि जी से जो पहली भेंट हुई वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण थी। फ़कीर बाबा कहते हैं कि दाता दयाल महाराज ने बहुत ही प्रेम से उनका स्वागत किया और उनका चेहरा तथा आकार शतप्रतिशत वैसा ही था, जो फ़कीर बाबा ने स्वप्न में देखा था। इससे फ़कीर बाबा के मन में दृढ़ विश्वास हो गया कि दाता दयाल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जी सचमुच ही भगवान् का अवतार हैं। उसी दिन युवा फ़कीर चन्द को दाता दयाल जी ने राधास्वामी मत की दीक्षा दी और उनका नाम फ़कीर चन्द से फ़कीर दयाल हो गया।

फ़कीर दयाल जी को दाता दयाल ने राधास्वामी मत के आदि गुरु स्वामी जी महाराज द्वारा लिखित 'सार बचन' नामक पुस्तक पढ़ने को दी, उस पुस्तक को पढ़ते-२ युवा फ़कीर की आंखों में आंसू टपकने लगे। उसका कारण यह था कि उस पुस्तक में, वेदान्त, इस्लाम सूफ़ी मत, बुद्ध धर्म इत्यादि सभी धर्मों की निन्दा की गई थी और यह बताया गया था कि ये सभी धर्म माया के चक्कर से बाहर नहीं निकले। उनके बहते हुए आंसुओं को देख कर दाता दयाल ने उन्हें कहा; "इस पुस्तक को दूर रख दो और जब तक मैं तुम्हें इसे पढ़ने का आदेश नहीं दूं मत पढ़ो।" इसके बाद उन्होंने युवा फ़कीर को दो और पुस्तकें पढ़ने के लिए दीं, जिनमें से एक महर्षि जी द्वारा लिखित रायसाहब सालिगराम जी महाराज की जीवनी थी और

दूसरी सन्त कबीर की कविताओं का संकलन 'कबीर साखी' थी।

उसी दिन से फ़कीर दयाल जी ने सुमिरन, ध्यान और भजन का अभ्यास दाता दयाल जी की आज्ञा से आरम्भ कर दिया। वह प्रति दिन दाता दयाल जी के रूप पर ध्यान लगाते, इससे उनको बहुत ही आनन्द और सन्तोष मिलता था।

फ़कीर दयाल जी को दाता दयाल जी ने यह आदेश दिया था कि जहां कहीं भी सम्भव हो सके वह राधास्वामी के सत्संग पर अवश्य जाया करें। अतः अपनी रेलवे की नौकरी तथा गृहस्थी का कर्त्तव्य निभाते हुए युवा फ़कीर सुमिरन और ध्यान में अपना अधिक समय लगाते और जहां कहीं भी अवसर मिलता राधास्वामी मत के सत्संग में जाते, परन्तु कुछ समय के पश्चात् उन्हें राधास्वामी मत के कुछ सत्संगियों के व्यवहार से मानसिक धक्का लगा। ये सत्संगी; बाबू कान्ता प्रसाद (जो उत्तर प्रदेश में गाज़ीपुर के राधास्वामी मत के

मुखिया थे) के अनुयायी थे; जो केवल कान्ताप्रसाद जी को ही परम सत्ता राधास्वामी दयाल का अवतार मानते थे और बाकी सबकी निन्दा करते थे। जब फ़कीर दयाल ने राधास्वामी मत के अनुयायियों का यह पक्षपाती तथा तंग दिली का व्यवहार देखा तो उन्होंने उनसे सम्पर्क रखना पसन्द नहीं किया किन्तु महर्षि दाता दयाल में उनका विश्वास रत्ती भर भी कम नहीं हुआ। १९१६ में अपनी माली हालत को सुधार कर परिवार को ग़रीबी से बचाने के लिए युवा फ़कीर ने अपनी सेवाएं पहले विश्व युद्ध के लिए बर्तानिया सरकार को पेश कीं। जब उन्हें इस सैनिक सेवा के लिए बग़दाद जाने का आदेश मिला तो वहां जाने से पहले दाता दयाल जी के दर्शन करने के लिए गये। दाता दयाल ने बड़े प्यार से उनका स्वागत किया और पूर्ण आशीर्वाद देते हुए और 'सार बचन' नामक वही पुस्तक जिसको पढ़ने के लिए उन्होंने कुछ समय पहले मना किया था देते हुए कहा, "अब तुम इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ो

भार सुमिरन, ध्यान और भजन पर अधिक समय दिया करो।"

बग़दाद में फ़कीर बाबा को साधना का बहुत समय मिलता था; इसलिए वह महर्षि जी के आदेश के अनुसार आन्तरिक अभ्यास में बहुत समय लगाने लगे और उन्होंने प्रकाश और शब्द के सभी आन्तरिक स्तरों का अनुभव कर लिया। इस ध्यान के कारण वे सदा आनन्द और मस्ती की हालत में रहने लगे। इतना कुछ होते हुए भी उनके मन में पूरा सन्तोष नहीं था। उनके मन में अभी भी प्रकाश से भी परे; उस परम सत्य पर पहुँचने की लालसा बनी रही, जिसके आधार पर स्वामी जी महाराज ने अपनी पुस्तक 'सार बचन' में सभी धर्मों को अपूर्ण बतलाया था।

उस परम तत्त्व को अनुभव करने की प्रबल इच्छा ने उन्हें बेचैन कर दिया। १९१८ के अन्तिम भाग में वह लम्बी छुट्टी ले कर भारत में आये और सीधे दाता दयाल जी के पास लाहौर

में गये। अपने मन की व्यथा दाता दयाल जी को बताते हुए पूछा, "मुझे परम सत्य का अनुभव कब और कैसे होगा।" दाता दयाल जी ने उत्तर दिया, "तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर कल दिया जायेगा।" दूसरा दिन फ़कीर बाबा के जीवन में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण दिन था, इसलिए उस घटना को फ़कीर बाबा के ही शब्दों में प्रस्तुत करना ठीक होगा। फ़कीर बाबा कहते हैं :—

"२५ दिसम्बर १९१८ की बात है। हज़ूर दाता-दयाल जी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। मैं पहले से ही इस क्षण को प्रतीक्षा में था। मैं अन्दर गया। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के चेहरे से एक विशेष प्रकार के प्रेम और आनन्द का भाव टपक रहा था। उन्होंने अकस्मात् मेरे हाथों में एक नारियल और पाँच पैसे रख दिये। मेरे मस्तक पर टीका लगाया और मेरे पांव को नमस्कार करके कहने लगे, "फ़कीर तुम स्वयं अपने समय के पूर्ण गुरु हो, सत्संगियों को सत्संग और नाम देना आरम्भ कर दो। समय आने पर तुम्हारे अपने सत्संगी ही

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तुम्हारा सच्चा गुरु प्रमाणित होंगे और उनके सम्पर्क में जो तुम्हारे अनुभव होंगे, उससे सन्त मत का गुप्त भेद समझ में आ जायेगा।' इन शब्दों ने मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव डाला। मैंने उस समय प्रसन्नता और शोक का मिला-जुला अनुभव किया दाता दयाल जो मेरे चेहरे के इन मिले-जुले भावों को भांप गये और मुझसे इसका कारण पूछा। मैंने नम्रता से कहा, दाता ! जब मैं स्वयं भी सत्य का पूरा ज्ञान नहीं रखता, तो इस ऊंचे मार्ग पर दूसरों को कैसे लगा सकता हूं ? मैं प्रसन्न इसलिए हूं कि आपने मुझे एक ऊंची पदवी दे दी है, जिससे मैं सतसंग करा सकता हूं और दीक्षा दे सकता हूं, ऐसे लगता है कि मैं कुछ बन गया हूं। यही कारण हैं कि मेरे चेहरे पर एकदम रौनक आ गई है। परन्तु साथ ही साथ मैं उदास भी हूं। उसका कारण वह है कि जब मैं यह सोचता हूं कि दूसरों को इस मार्ग पर कैसे चलाऊंगा जब कि मैं स्वयं अन्धकार में हूं।' दाता दयाल जी ने मुस्कराते हुए कहा, 'फ़कीर भले ही तुम्हारे में निनानवे त्रुटियां क्यों न हों परन्तु तुम्हारे में सत्य बोलने का जो गुण है वह तुम्हें यकीनन

जीवन के ऊंचे लक्ष्य पर पहुंचा देगा । तुम इसी जीवन में ही न ही केवल स्वयं मुक्ति पाओगे, परन्तु असख्य अन्य जीवों को भी मुक्ति प्राप्त करने में सहायता दोगे मैंने अपनी पूरी छुट्टियां दाता दयाल जी के पास बिताईं और परम आनन्द का अनुभव करके वापिस अपने काम पर बग़दाद लौट आया।"

बगदाद में आ कर फ़कीर बाबा समय मिलने पर भक्ति भाव के भजन गाते रहते और हजूर दाता दयाल जी को भगवान् राम का पूर्ण अवतार मानने के कारण उनके प्रेम तथा ध्यान में मग्न रहते। उनकी इस परम भक्ति को देखकर वह बग़दाद में रहने वाले सत्संगियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गये और सभी उन्हें 'महात्मा' कहने लगे । कुछ लोगों ने उन्हें अपना गुरु भी स्वीकार किया।

इसके पश्चात् ईराक में फ़कीर बाबा के साथ जो-२ विचित्र घटनाएं घटित हुईं, उनमें से कुछ का उल्लेख अगले अध्याय में किया जायेगा। यहाँ पर तो इतना कह देना पर्याप्त होगा कि अनेक बार जब युद्ध के मोर्चे पर फ़कीर बाबा ऐसी-२ भयानक स्थितियों में थे, यहां मौत मुंह खोले खड़ी थी, वहां चामत्कारिक

रूप से दाता दयाल जी द्वारा उनकी रक्षा की गई। इससे फ़कीर बाबा को दाता दयाल जी में श्रद्धा और विश्वास और भी बढ़ गया।

लगभग तीन महीने के पश्चात् जब युद्ध बन्द हुआ और जवान अपने बैरिकों में गये तो फ़कीर बाबा बग़दाद वापिस लौट आये। बगदाद में राधास्वामी मत के बहुत से सत्संगी थे। जब उन्हें उनके वापिस आने का पता चला; तो वे तब मिल कर फ़कीर बाबा के पास पहुंचे और उन्हें एक ऊंचे सिंहासन पर बिठा कर उनको फूल अर्पित किये और उनकी पूजा की। फ़कीर बाबा इससे चकित रह गये और उन्होंने सत्संगियों से पूछा, "आप के तथा मेरे गुरु तो हजूर दाता दयाल जी हैं, जो लाहौर में रहते हैं। मैं तो आपका गुरु नहीं, फिर आप मेरी पूजा क्यों कर रहे हैं?" उन सबने मिल कर उत्तर दिया, "जब युद्ध के मैदान में मौत हमारे सिर पर मंडरा रही थी और हमारे बचने की कोई

[शेष क्रमशः

फ़कीर बाबा की जीवनी, पृष्ठ—39-40